ओ३म्

वैदिक संस्कृति का उद्घोषक

वैदिक सार्वदेशिक

उत्प्रवर्तक महर्षि दयानन्द सरस्वती

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली का साप्ताहिक मुख-पत्र

शुल्क :- एक प्रति 5 रुपया (भारत में) वार्षिक 250 रुपये तथा आजीवन 2500 रुपये

वर्ष 16 अंक 28 कुल पृष्ठ-8 15 से 21 अप्रैल, 2021 दयानन्दाब्द 198 सृष्टि सम्वत् 1960853122 सम्वत् 2078 चै. शु.-03

युवा निर्माण पर ताकत लगायेगा आर्य समाज

– स्वामी आर्यवेश

देश में युवाओं को संस्कारित करने का अभियान होगा तेज

– स्वामी आदित्यवेश

12 जून 2021 को रोहतक में आयोजित होगा आर्य युवा सम्मेलन

(11 अप्रैल 2021) आर्य समाज के युवा संगठन सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद् की कोर ग्रुप की बैठक स्वामी इंद्रवेश विद्यापीठ टिटौली, रोहतक, हरियाणा में आयोजित की गई। बैठक की अध्यक्षता आर्य समाज के सर्वोच्च संगठन सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी ने की। उन्होंने सभी कार्यकर्ताओं को युवा निर्माण अभियान को पूरी ताकत से आगे बढ़ाने का संकल्प करवाया। उन्होंने कहा कि आज युवाओं के निर्माण की योजना न तो किसी सरकार के पास है ना किसी धार्मिक संगठन के पास है। इसलिए आर्य समाज वर्तमान समय में दिग्भ्रमित युवाओं को सही दिशा देने के लिए व उनमें राष्ट्रभक्ति व वैदिक संस्कृति के संस्कार पैदा करने के लिये कार्य कर रहा है। अब युवा निर्माण अभियान पर और ताकत के साथ कार्य को तेज किया जाएगा। परिषद के राष्ट्रीय महामंत्री श्री बिरजानंद एडवोकेट ने कहा की नौजवान ही किसी देश की नींव होते हैं और नींव जितनी मजबूत होती है उस पर इमारत भी उतनी ही बुलंद होती है। इसलिए युवाओं को बुराइयों से बचाना समाज की जिम्मेदारी है। समाज के नव निर्माण में नौजवान की भूमिका अहम् होती है।

आगामी कार्यक्रमों की रुपरेखा

बैठक में आगामी कार्यक्रमों को जोर–शोर से करने के लिए सर्वसम्मति से निर्णय लिये गए। इस अवसर पर बेटी बचाओ अभियान की राष्ट्रीय संयोजक प्रवेश आर्या ने बताया कि लगभग 100 शिविर पूरे प्रान्त में आयोजित किये जायेंगे। उन्होंने बताया कि 1 से 5 जून, 2021 तक टिटौली में शिक्षक प्रशिक्षण शिविर, 6 से 12 जून, 2021 तक राष्ट्रीय कन्या चरित्र निर्माण शिविर का आयोजन किया जायेगा। जबकि युवाओं का प्रांतीय शिविर 13 से 18 जून, 2021 तक रोहतक के टिटौली में आयोजित होगा। जिसमें 500 युवा भाग लेंगे। बाकी शिविर स्थानीय स्तर पर आयोजित किये जायेंगे।

युवाओं को वैदिक संस्कृति से जोड़ने के लिए सत्यार्थ प्रकाश प्रतियोगिता का आयोजन होगा। 13 अप्रैल, 2021 नव वर्ष से 13 मार्च 2022 स्वामी इंद्रवेश जन्मदिवस तक 25 हजार नवयुवकों को परिषद् की सदस्यता दिलवाई जाएगी। 500 इकाइयों का गठन किया जाएगा।

सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद् हरियाणा के प्रधान स्वामी आदित्यवेश जी ने बताया कि आगामी मई, जून व जुलाई माह में शिविरों के माध्यम से युवाओं को आर्य समाज से जोड़ा जायेगा। स्वामी जी ने कहा कि पूरे देश में युवाओं को संस्कारित करने का अभियान तेज गति से आगे बढ़ाया जायेगा। गाँव–गाँव में युवाओं के पांच–पांच दिन के शिविर आयोजित किये जायेंगे। जिनके माध्यम से युवाओं को प्राचीन वैदिक संस्कृति से, राष्ट्रभक्ति से व नैतिक शिक्षा से ओत–प्रोत किया जायेगा। बेटी बचाओ अभियान की राष्ट्रीय अध्यक्ष पूनम आर्या ने कहा कि आजकल समाज में डिप्रेशन की समस्या ने लोगों को घेर रखा है। उन्हें योग व आध्यत्मिक प्रशिक्षण देकर डिप्रेशन से बचाया जा सकता है। हम अपने शिविरों में अबकी बार इस पर और ज्यादा केन्द्रित रहेंगे। इस बैठक में वरिष्ठ संयासी स्वामी चंद्रवेश जी, स्वामी ब्रह्मानन्द जी, प्रिंसिपल आजाद सिंह बांगड़, पूर्व अध्यक्ष राम निवास, कार्यकारी प्रधान सज्जन राठी, ऋषिराज शास्त्री, कोषाध्यक्ष हरपाल आर्य, प्रदेश प्रवक्ता प्रदीप कुमार, अशोक आर्य, अजीतपाल, दलबीर आर्य डॉ. विवेकानंद, जयवीर आर्य, डॉ. राजेश, शशि आर्या, रिंकू आर्या, रीमा आर्या, इंदु, एकता, पूजा, पूनम आर्य, मीनू आर्या आदि ने अपने विचार रखे।

सम्पादक - प्रो. विट्ठलराव आर्य

सत्यार्थ प्रकाश में आधुनिक विज्ञान

– वेद प्रकाश गुप्ता

हम आधुनिक विज्ञान को विज्ञान भी कहते हैं जो वर्तमान के अधिकांश विद्यालयों मे पढ़ाई जाती है। इसी विषय के पढ़े बच्चे इंजीनियर, डाक्टर, अंतरिक्ष विज्ञानी आदि भी बनते हैं। हम सभी जानते हैं कि ऋषि दयानंद जी विज्ञान के ज्ञान को बहुत अधिक महत्व देते थे क्योंकि इसी के द्वारा बहुत से तथ्यों की सत्यता परखी जा सकती है। हम विज्ञान के आधार पर दैनिक जीवन के कई कार्यकलापों एंव कर्मकांडों की उपयोगिता, प्रक्रिया, सर्वलाभदायक या हानिकारक होने को जान सकते हैं एंव सिद्ध कर सकते हैं। विज्ञान के ज्ञान को ही उत्तरोत्तर वृद्धि कर हम नये नये सत्य तथ्यों एंव उपकरणों का आविष्कार कर रहे हैं। जब स्वामी दयानंद जी ने सत्यार्थ प्रकाश आदि पुस्तकों को लिखा होगा, उस समय करीब 1870 में, पूरे भारत में 5 से भी कम विश्वविद्यालयों और 50 से भी कम कालेजों में ही विज्ञान की शिक्षा दी जाती रही होगी और उस समय विज्ञान का ज्ञान, आज की अपेक्षा नगण्य रहा होगा। उन्होने पुस्तकों के ज्ञान एंव प्रत्यक्ष प्रमाण, प्रत्यक्ष में स्वयं द्वारा देखे एंव अनुभव के आधार पर कई वैज्ञानिक तथ्यों को लिखा है जो आज भी विज्ञान के अनुसार उचित एंव अनुकरणीय है जिसका एक उदाहरण है, सत्यार्थ प्रकाश समुल्लास 4 के पहले पृष्ठ पर लिखा तथ्य कि "निकट सम्बन्धियो में विवाह न करने का कारण", जो वर्तमान के विज्ञान के शोधों से भी सिद्ध हुआ है। गूगल सर्च पर उपलब्ध साहियों के अनुसार, एक अध्ययन से पता चला है कि निकट सम्बन्धियों में विवाह करने वालों में से 97 प्रतिशत परिवारों के बच्चे अनुवांशिक रोग से पीड़ित थे। उन्होने विज्ञान का ज्ञान वेदों के गहन अध्ययन और विविध आर्ष साहित्य से प्राप्त किया था। स्वामी दयानंद जी की आत्मकथा से विदित होता है कि वह मृत्यु के पहले लगभग 16000 रुपया, दो आर्य विद्यार्थियों को जर्मनी में विज्ञान की उच्चशिक्षा प्राप्त करने हेतु इकट्ठा कर चुके थे। उनकी मृत्यु के बाद यह कार्य नही हो सका। इन सब के बावजूद भी उन्होने विज्ञान के ज्ञान का भरपूर उपयोग अपनी पुस्तक में लिखा है। उन्होने बहुत से वैज्ञानिक तथ्यों को सत्यार्थ प्रकाश में लिखा हैं। पाठकों के संज्ञानार्थ, प्रकाशक मानव उत्थान संकल्प संस्थान, 46/5 कम्यूनिटी सेंटर, ईस्ट आफ कैलाश, नई दिल्ली– 110 065 सन् 2005 में प्रकाशित सत्यार्थ प्रकाश में लिखे विभिन्न पृष्ठों में वैज्ञानिक तथ्यों को, विज्ञान की महत्ता दर्शाने हेतु लिखा जा रहा है। अन्य प्रकाशकों द्वारा प्रकाशित सत्यार्थ प्रकाश में पृष्ठ नंबर भिन्न हो सकते हैं।

1, पृष्ठ 33, समुल्लास 2 में– "उत्तर–कहिए ज्योतिर्वित्! जैसी यह पृथ्वी जड़ है, वैसे ही सूर्यादि लोक हैं। वे ताप और प्रकाशादि से भिन्न कुछ भी नही कर सकते। क्या ये चेतन हैं, जो क्रोधित होके दुःख और शान्त होके सुख दे सकें?"

विज्ञान के तथ्य– विज्ञान से हम सभी जानते हैं कि सूर्य एक जड़ पदार्थ और आग का बहुत ही बड़ा गोला है जो हमें ताप और प्रकाश ही दे सकता है और इसके अतिरिक्त कुछ भी नही। इसमे चेतनता के कोई गुण नही हैं। यह पृथ्वी से कई करोड़ो किलोमीटर दूर है।

2, पृष्ठ 41, समुल्लास 3 में– "उत्तर– जो तुम पदार्थविद्या जानते तो कभी ऐसी बात न कहते। क्योंकि किसी द्रव्य का अभाव नही होता। देखो, जहाँ होम होता है वहां से दूर देश मे स्थित पुरुषों को नसिका से सुगन्ध का ग्रहण होता है वैसे दुर्गंध का भी। इतने से समझ लो कि अग्नि में डाला गया पदार्थ सूक्ष्म होके फैल के वायु के साथ दूर देश में जाकर दुर्गंध की निवृति करता है।"

विज्ञान के तथ्य– विज्ञान में पदार्थ विद्या का अध्ययन भौतिक शास्त्र एंव रसायन शास्त्र में होता है जिसके अनुसार किसी पदार्थ का नाश यानी अभाव नही होता है और समस्त वनस्पतीय पदार्थों के घटक, उड़नशील पदार्थों को गर्म कर वाष्प यानी वायुरुप मे बदल कर हवा में फैला सकते हैं। विज्ञान से ही हम जानते हैं कि तीव्र प्रदीप्त अग्नि जो ज्वालायुक्त अग्नि ही होती है, में जब कोई जल सकने वाले पदार्थ जैसे लकड़ी, घृत, तेल, समस्त वनस्पतीय पदार्थ डाले जाते हैं तब वह सब भी ज्वाला के साथ जल जाते यानी दहन हो जाते हैं। हम किसी पदार्थ की अवस्था और स्वरुप ही बदल सकते हैं। उसका नाश नही कर सकते हैं।

3, पृष्ठ 86, समुल्लास 4 में– "चौथा वैश्वदेव– अर्थात जब भोजन तय्यार हो तब जो कुछ भोजनार्थ बने, उसमें से खट्टा, लवणान्न और क्षार को छोड़के घृत– मिष्टयुक्त अन्न लेकर चूल्हे से अग्नि लेकर अलग धर निम्नलिखित मंत्रों से आहुति और भाग करें।"

विज्ञान के तथ्य– यह एक बलिवैश्वदेव यज्ञ की प्रक्रिया, साधन एंव सामग्री लिखा है जिससे समुल्लास 3 में लिखे यज्ञ के लक्ष्यों की प्राप्ती होती है। जो विज्ञान एंव प्रत्यक्ष अनुभूति एंव देखने और सूंघने में भी सत्यापित होती है। घर में बने उपरोक्त व्यंजनों को चूल्हे की अग्नि जो कि कोयला या कंडा की ही अग्नि होती हैं, में आहुतियां देने से, इन पदार्थों का दहन नही होता है, बल्कि यह पदार्थ गर्म होकर मात्र सूक्ष्म कणों में अलग अलग हो कर भाप यानी वाष्प बनकर हवा में फैलती है। इन वाष्प कणों में घृत एंव हव्य के मूल रसायनों के समस्त गुण सुगंध, स्वाद, औषधीय गुण आदि यथावत् ही रहते हैं। कुछ भी नश्ट नहीं होता है। यह रसायनें समस्त मनुष्यों, जानवरों, पशु पक्षियों को श्वास लेने पर ग्रहण होकर विभिन्न लाभ देते हैं। कोयला या कंडा की यह मध्यम आँच की अग्नि होती है। इसमें अग्नि के ज्वालाओं जितना उच्च तापमान नही होता है कि आहुति किए गए पदार्थों का दहन हो सके। यह मात्र गर्म होकर वाष्प बनकर हवा में फैलते हैं। अतः लिखा हुआ तथ्य विज्ञान एंव प्रत्यक्ष प्रमाण से भी सत्यापित होता है।

4, पृष्ठ 181, समुल्लास 8 में– "उत्तर – जो स्वभाव से जगत की उत्पत्ति – – (करीब 10 लाइन के बाद) – – –। जैसे हल्दी, चूना और नीबू का रस दूर –दूर देश से आकर आप नही मिलते, किसी के मिलाने से मिलते हैं, उसमें भी यथायोग्य मिलाने से रोरी बनती है, अधिक न्यून वा अन्यथा करने से रोरी नही होती;"

विज्ञान के तथ्य– हम सभी विज्ञान एंव प्रत्यक्ष प्रमाण में जानते हैं कि एक निर्धारित तापमान के दूध में बहुत थोड़ा दही मिलाने से कुछ घंटो में ही पूरा दूध, दही बन जाता है। ऐसे ही राख पर नीबू या कोई भी तेजाब डालने से खूब गैस के बुलबुले उठते हैं। यह सब इन पदार्थों में रसायनिक क्रियाएं होने से होती हैं। ऐसे ही हल्दी, चूना और नीबू रस को निर्धारित मात्राओं में मिलाने से रोरी बनती है।

5, पृष्ठ 181, समुल्लास 8 में– "उत्तर – विना कर्त्ता के कोई भी क्रिया वा क्रियाजन्य पदार्थ नही बन सकता। – – (करीब 2 लाइन के बाद)– – –। जो तुम इसको न मानों तो कठिन से कठिन पाषाण, हीरा और फौलाद आदि तोड़ के, टुकड़े कर, गला वा भष्म कर देखो कि इनमें परमाणु पृथक– पृथक मिले हैं वा नही?"

विज्ञान के तथ्य– सभी विज्ञानी जानते हैं कि गति के तीन नियम हैं। संक्षिप्त में पहला नियम कि कोई पदार्थ बगैर बल लगाये, अपने आप गतिमान नही हो सकता है। अतः बगैर कर्त्ता के कार्य के कोई कार्य नही हो सकता है। दूसरा नियम कि किसी वस्तु पर जिस दिशा में जितना ज्यादा बल लगाया जायेगा तो उस वस्तु में उसी दिशा में उतना ही ज्यादा गति होगा। तीसरा नियम कि प्रत्येक क्रिया की सदैव बराबर विपरीत दिशा में प्रतिक्रिया होती है जिसका उदाहरण है कि जब हम मेज पर जितने बल से मुक्का मारते हैं तब मेज की सतह द्वारा हमारे हाथ पर उतना ही बल प्रतिक्रिया में लगा देता है जिससे ही हमे चोट लगती है। हम विज्ञान से जानते हैं कि किसी भी तत्वों का सूक्ष्मतम कण परमाणु होता है। किसी भी पदार्थ का सूक्ष्मतम कण अणु होता है जिसमें एक से अधिक तत्वों के परमाणु होते हैं जो परस्पर आकर्षण बल से आपस में जुड़े होते हैं जिसे बल आदि प्रयोग करने पर अलग अलग किए जा सकतें हैं।

6, पृष्ठ 190, समुल्लास 8 में– "उत्तर – ये दोनो आधे झूठे हैं। क्योंकि वेद में लिखा है कि – आयं गौः – प्रयन्त्स्वः।। यजु:० । अ० 3। म० 6 ।।

अर्थात यह भूगोल जल के सहित सूर्य के चारों ओर आकाश में घूमती जाती है, अर्थात सूर्य के चारों ओर भूमि घूमा करती है – (करीब 4 लाइन के बाद)– – – – और सब मूर्तिमान द्रव्यों को दिखलाता हुआ, सब लोकों के साथ आकर्षण गुण से यह वर्त्तमान, अपनी परिधि में घूमता रहता है, – – (करीब 3 लाइन के बाद)– – – जैसे यह चंद्र लोक सूर्य से प्रकाशित होता है, वैसे ही पृथिव्यादि लोक भी सूर्य के प्रकाश ही से प्रकाशित होते हैं। परतुं रात और दिन सर्वदा वर्त्तमान रहते हैं, क्योंकि पृथिव्यादि लोक घूम कर जितना भाग सूर्य के सामने आता जाता है, उतने मे दिन और जितना पृष्ठ में अर्थात आड़ में होता जाता है, उतने में रात।"

विज्ञान के तथ्य– विज्ञान एंव भूगोल शास्त्र के ज्ञान के अनुसार से हम जानते हैं कि पृथ्वी थल एंव जल के साथ सूर्य के चारों ओर घूमती रहती है। हम यह भी जानते हैं कि पृथ्वी, सूर्य, चद्रमा आदि सभी ग्रह परस्पर आपसी आकर्षण यानी गुरुत्वाकर्षण बल से अपनी अपनी धुरी पर अपने अपने निर्धारित परिधि पर निरतंर अनवरत चलायमान यानी घूमते रहते हैं। सूर्य से ही पृथ्वी, चंद्रमा आदि प्रकाशित होते हैं। अतः ऋषि द्वारा लिखे गये तथ्य पूर्णतः विज्ञान सम्मत है।

7, पृष्ठ 260, समुल्लास 11 में– पन्द्रहवाँ– परमेश्वर ने पुष्पादि सुगन्ध, वायु–जल के दुर्गन्ध निवारण और आरोग्यता के लिये बनाये हैं, उनको पुजारी तोड़ कर नष्ट कर देते हैं। पूर्ण सुगन्ध के समय तक उसका सुगन्ध होता है, उसका नाश मध्य में ही कर देते हैं। पुष्पादि कीच के साथ मिल–सड़कर उल्टा दुर्गन्ध उत्पन्न करता है। इसलिये मूर्तिपूजा करने में पाप होता है।

विज्ञान के तथ्य– एक फूल जितने दिन पेड़ में लगा रहता है, उतने दिन उसमें सुगंधित रसायन दिन रात चौबीसो घंटे बनते रहते हैं और वह हवा में फैल कर लाखों लोगों को नसिका से ग्रहण होकर लाभ देतें रहते हैं। जिस क्षण यानी समय पर फूल को तोड़ा जाता है, उसी क्षण से सुगंध का बनना बंद हो जाता है और उसका सड़न प्रक्रिया प्रारम्भ हो जाता है। सड़न में कई गैसें जैसे कार्बन डाईआक्साइड, फार्मलडिहाइड, इथेनाल आदि हानिकारक होते हैं जो हवा को प्रदूषित करती है तथा हवा में रोगाणु भी फैलते हैं। इस प्रकार फूलों को तोड़ना पूर्णतः अवैदिक, आर्य समाज के नियमों के विरुद्ध है, पर्यावरण के हित में नही है तथा विज्ञान सम्मत भी नही है। जिस कार्य से किसी का अहित होता है, वह कार्य पापमय होता है अतः फूलों का तोड़ना पाप है और ऋषि द्वारा लिखा गया तथ्य पूर्णतः विज्ञान सम्मत है।

8, पृष्ठ 265, समुल्लास 11 में– "उत्तर– झूठी। क्योंकि उस मन्दिर में भी दिन मे अन्धेरा रहता है। दीप रात– दिन जला करता है। जब जल की धारा छोड़ते हैं, तब उस जल में बिजुली के समान दीप का प्रतिबिम्ब चमकता है, और कुछ भी नही। न पाषाण घटे, न बढ़े, जितना का उतना रहता है। ऐसी लीला करके बिचारे निर्बुद्धियों को ठगते हैं।

विज्ञान के तथ्य– प्रकाश विज्ञान के ज्ञान से हम जानते हैं कि किसी वस्तु को देखने पर वह वास्तविक आकार का दिखता है। यदि वस्तु के पहले कोई पारदर्शी शीशा आ जाय तब वस्तु छोटा या बड़ा एंव टेढ़ा मेढ़ा आदि दिखाई पड़ सकता है। जो पारदर्शी शीशा के सीधा होने या बीच में "दबा होने" या "बीच में उभरा होने पर निर्भर करता है जो प्रकाश के किरणों के आवर्तन, परावर्तन होने पर निर्भर करता है जिसे हम दिन प्रतिदिन के जीवन में भी देखते रहते हैं। अतः स्वामी दयानंद जी द्वारा लिखा उपरोक्त तथ्य पूर्णतः विज्ञान सम्मत है। इसे स्वयं सत्यापित करने के लिए एक शीशे का ग्लास लीजिये। इसे किसी मेज आदि पर रखें। इसके पीछे कोई वस्तु रख दीजिये और ग्लास के द्वारा उस वस्तु को देखिये कि वह वस्तु कैसा दिखता है। अब ग्लास मे जल भर दीजिये और वस्तु को देखिये वह भिन्न दिखाई देगा। अब वस्तु को देखते हुए, धीरे धीरे ग्लास को खिसकाइये अब वस्तु विभिन्न रुपों में दिखाई देगा। यह प्रकाश के किरणों के आवर्तन, परावर्तन होने के कारण होता है।

9, पृष्ठ 265, समुल्लास 11 में– "उत्तर – झूठा–झूठा–झूठा। यह सब पोपलीला है। क्योंकि वह, मूर्ति का मुख पोला होगा। उसका छिद्र पृष्ठ में निकाल के, भित्ती के पार, दूसरे मकान में नल लगा होगा। जब पुजारी हुक्का भरवा, पेंचवान् लगा, मुख में नली जमाके, पड़दे डाल, निकल आता होगा, तभी पीछे वाला आदमी मुख से खींचता होगा तो इधर हुक्का गड़– गड़ बोलता होगा। दूसरा छिद्र नाक और मुख के साथ लगा होगा। जब पीछे फूकें मार देता होगा तब नाक और मुख के छिद्रों से धुआँ निकलता होगा। उस समय बहुतेरे मूढ़ों को धनादि पदार्थों से लूट कर धन रहित करते होगें।"

विज्ञान के तथ्य– हम सभी जानते हैं कि मिट्टी, धातुओं की मूर्तियां अंदर से खोखली यानी पोली बनाई जाती हैं। मूर्तियों के मुख और नाक में छिद्र बनाया जा सकता है तथा तली में छेद कर उसमें पाइप लगाकर जमीन के नीचे से ले जाकर पीछे के कमरे या परदे के पीछे ले जाकर उपरोक्त कार्यवाही से सीधे साधे लोगों को मूर्ख बनाया जा सकता है जो विज्ञान वा सामान्य ज्ञान से उचित है।

10, पृष्ठ 266, समुल्लास 11 में– "प्रश्न– देखो! सोमनाथजी पृथ्वी से ऊपर रहता था और बड़ा चमत्कार था, क्या यह भी मिथ्या बात है?

उत्तर– हाँ मिथ्या बात है। क्योंकि वह लोहे की पोली मूर्ति थी। नीचे ऊपर चुम्बक पाषाण लगा रखे थे। उसके आकर्षण से वह मूर्ति अधर में खड़ी थी।''

विज्ञान के तथ्य– हम सभी जानते हैं कि लोहे या अन्य धातु की पोली मूर्ति बहुत हल्की होती हैं। लोहे की मूर्ति को चुंबक अपनी ओर खींचता है तथा दो चुबंको के बीच एक लोहे की वस्तु या मूर्ति को इस प्रकार रखा जाय कि वह किसी भी चुबंक के पास न जा सके बल्कि वह एक स्थान पर स्थिर रहे। यह बात विज्ञान सम्मत एंव प्रत्यक्ष में करके देखा जा सकता है।

11, पृष्ठ 276, समुल्लास 11 में– "प्रश्न– ज्वालामुखी तो प्रत्यक्ष देवी है, सबको खा जाती है और प्रसाद देवे तो आधा खा जाती और आधा छोड़ देती है। – –(करीब 5 लाइन के बाद) – –उत्तर– नही। क्योंकि वह ज्वालामुखी पहाड़ में से आगी निकलती है। उसमें पुजारी पोपों की विचित्र लीला है। जैसे बघार के घी के चमचे में ज्वाला आ जाती, अलग करने से वा फूँक मारने से बुझ जाती, थोड़ा सा घी को खा जाती, शेष छोड़ जाती, उसी के समान वहां भी है। जैसे चूल्हे की ज्वाला में जो डाला जाय, सब भस्म होता, जंगल वा घर में लग जाने से सबको खा जाती है।"

विज्ञान के तथ्य– हम सभी विज्ञान के भूगर्भ शास्त्र के ज्ञान से जानते हैं कि पृथ्वी के सतह मिट्टी, पत्थर के पहाड़ों के हैं तथा उसके नीचे जल, पत्थर का कोयला, पेट्रोलियम पदार्थों आदि के तह हैं और केन्द्र के आस पास अतयतं उच्च तापमान के पिघले हुए पदार्थ तरल अवस्था में हैं तथा वर्तमान में कभी कभी पृथ्वी के सतह फटकर बाहर फौव्वारे के रुप में निकलता रहता है जिसे हम ज्वालामुखी कहते हैं। यही उपरोक्त प्रश्न– उत्तर में लिखा है जो पूर्णतः भूगर्भ विज्ञान सम्मत है।

बघार बनाने को, चमचे में घृत आदि को "मध्यम आँच" के अग्नि पर रखकर गर्म कर भूना जाता है। विज्ञान के अनुसार, गर्म करते समय घृत आदि का तापमान जब 160 सें 260 डिग्री सेंटीग्रेड के बीच रहता है, तब घृत आदि का अतिन्यून मात्रा भाप यानी वाष्प यानी वायुरुप में मूल सुगंधियों, गुणों के साथ हवा में फैलने लगती है। किसी कारण से जब अग्नि का तापमान "उच्च" यानी 260 डिग्री सेंटीग्रेड से अधिक हो जाता है, तब घृत आदि का ज्वलन, दहन होने लगता है। इस दहन प्रक्रिया में पदार्थ के उड़नशील घटक वाष्प बनकर, ऊपर वायु में आते ही, वायु के घटक आक्सीजन गैस से रसायनिक क्रिया कर, कार्बन डाईआक्साइड गैस, कुछ पानी भाप के रुप में एंव "ज्वाला" यानी अत्यधिक उर्जा गर्मी एंव प्रकाश में परिवर्तित हो रहती है, जिससे वातावरण में उश्मा एंव प्रकाश फैलती है। इस रसायनिक क्रिया होने के कारण घृत आदि की मात्रा घटती रहती है। ज्वाला यानी लौ के क्षेत्र में तापमान लगभग 300 से 3000 डिग्री सेंटीग्रेड तक हो सकता है। ज्वाला बनने की प्रक्रिया तब तक चलती रहती है, जब तक दहन हो रहे पदार्थ घटते घटते समाप्त हो जाते हैं। अतः यह तथ्य विज्ञान सम्मत है एंव प्रत्यक्ष में करके देखा जा सकता है।

12, पृष्ठ 282, समुल्लास 11 में– "यह {ग्रहलाघव?} का वचन और इसी प्रकार 'सूर्यसिद्धान्तादि' मे भी है। अर्थात जब सूर्य– भूमि के मध्य में चन्द्रमा आता है तब 'सूर्य ग्रहण' और जब सूर्य्य और चन्द्र के बीच भूमि आती है तब 'चन्द्रग्रहण' होता है। अर्थात चन्द्र की छाया भूमि पर और भूमि की छाया चन्द्रमा पर पड़ती है। सूर्य प्रकाशरुप होने से उसके सम्मुख छाया किसी की नही पड़ती है किन्तु जैसे प्रकाशमान सूर्य्य वा दीप से देहादि की छाया उल्टी जाती है, वैसे ही ग्रहण में समझो।"

विज्ञान के तथ्य– जब हम दिन में पृथ्वी पर चलते हैं तब हमारी छाया पृथ्वी पर पडती है। इसी प्रकार पेड़ों, भवनों एंव पतगं उड़ाने पर तागा एंव पतंग की छाया पृथ्वी पर पड़ती है। इसी प्रकार जब सूर्य– भूमि के मध्य में चन्द्रमा आता है तब चंद्रमा की छाया पृथ्वी पर पड़ती है तब सूर्य का कुछ भाग हमें दिखाई नही देता है और सूर्य कुछ कटा कटा दिखाई देता हैं जिसे हम गलती से मान लेते हैं कि सूर्य पर ग्रहण लग गया है। ऐसे ही जब शेष पृष्ठ 6 पर

आवाहन आमन्त्रण

यज्ञ पुरुष हमारे पूज्य स्वामी सुमेधानन्द जी के 84वें जन्मदिन को मनाने का

यज्ञो वैः पुरुषः – निश्चित रूप से मनुष्य का जीवन भी एक यज्ञ ही है। यज्ञ का भाग है, यज्ञ के लिए है। हमारे पूज्य चरणों ने इस मर्म को जाना। शतपथ ब्राह्मण के इस वचन को अपने हृदय में धारण किया और सन्यस्त होने के बाद अपने जीवन में उन्होंने यज्ञों की प्रक्रिया को प्रारम्भ कर दिया। यह कहते हुए कि – हे अग्नि देव, हे यज्ञदेव अयं ते इध्म – यह जो मेरा जीवन है वह तेरी समिधा है। जब तक यह है, तब तक तुम खूब प्रज्ज्वलित हो जाओ। भरपूर रूप से जलती रहो, जीवन के अन्तिम श्वास तक मैं तुम्हें प्रज्ज्वलित रखूंगा। हर हाल में जलाए रखूंगा, बुझने नहीं दूंगा। वेद भगवान का जब आदेश हुआ कि यह तेरा शरीर यज्ञ के लिए है तो उसी आदेश का पालन करते हुए मैंने भी प्रतिज्ञा कर ली है कि यह मेरा शरीर अग्नि के लिए ही होगा। इसलिए हे जातवेद, हे यज्ञाग्नि मेरे द्वारा तुम इधस्व प्रज्ज्वलित हो जाओ, खूब वर्धस्व वृद्धि को प्राप्त हो जाओ और विभिन्न प्रकार से हमें भी बढ़ाओ। बस इसी प्रार्थना को करते हुए अपने जीवन रूपी समिधा के साथ विभिन्न प्रकार के यज्ञों को करते हुए अन्त में सर्व वैः पूर्णम स्वाहा अपना सर्वस्व ही यहां तक कि अथैदम् भस्मान्तमशरीरं – इस शरीर ने एक दिन भस्म ही होना है तो क्यों न इसे यज्ञ की ही भस्मी बना दूँ, कहते हुए जो अपने शरीर को भी यज्ञ की अग्नि को समर्पित कर ब्रह्मलोक को प्रयाण कर गए। ऐसे हमारे पूज्य चरणों के जन्मदिन को क्यों न हम यज्ञ व सत्संग के द्वारा मनायें। यही यज्ञपुरुष, हमारे पूज्य चरणों के जन्मदिन को मनाने का सर्वोत्तम तरीका होगा। उनके श्री चरणों में अपने श्रद्धासुमनों को अर्पित करने का श्रेष्ठ प्रकार होगा। यज्ञ में सभी देवजन, पितृगण भी आ उपस्थित हो जाते हैं। इसका समर्थन स्वयं वेद भगवान भी करते हैं। इसलिए यज्ञ व सत्संग के द्वारा हम अपने पूज्य चरणों के जन्मदिन को मनाते आ रहे हैं। 5 अप्रैल को अपने प्रिय पुत्र स्व. ऋषि कुमार को भी इसी तरह हम याद करते हैं, प्रतिवर्ष याद करते हैं। इन दिनों में हम देवों, पितरों व दिव्यात्माओं का श्राद्ध व तर्पण करते हैं। इस बार भी 5 अप्रैल को जीवन के अन्तिम क्षणों तक भी हृदयपटल पर अमिट स्मृतियों वाले प्रिय पुत्र जन्मदिन को पारिवारिक स्तर पर इसी रूप में मनायेंगे और 5 मई को पूज्य चरणों के जन्मदिन को 3 से 5 मई को त्रिदिवसीय कार्यक्रम का रूप देकर यज्ञ व सत्संग के द्वारा मनाने के लिए आप सभी प्रियजनों का आवाहन कर रहा हूँ। यद्यपि उत्साह उमंगों से भरे हृदयाकाश पर कोरोना से जनित सघन निराशा के बादल भी बीच–बीच में छाने का प्रयास कर रहे हैं। फिर भी उस निराशा से ऊपर उठने का प्रयास करते हुए मैं आप सबसे निवेदन कर रहा हूँ। हे मेरे प्रियजनों आओ हम सब मिलकर उस दिव्य पुरुष, परमात्मा के वरदपुत्र, अपने पूज्य चरणों के जन्मदिन को यज्ञ याग का भव्य आयोजन के साथ वातावरण में गीत संगीत की मधुर स्वर लहरियों को बिखेरते हुए, प्रवचनों की पतित पावनी गंगा को बहाते हुए मनाएं। उनके जन्मदिन को मनाने में अपनी–अपनी अहम भूमिका निभायें। जीवन में सेवा व समर्पण के ऐसे अवसर बहुत कम आते हैं। सौभाग्य से जब आते हैं, तब इन्हें गंवाना नहीं चाहिए। इस कार्यक्रम को सफल करने के लिए भरपूर रूप से अपना योगदान देना। समय परिस्थितिवश यदि आप अपनी उपस्थिति दर्ज नहीं कर सकते हैं तो जिस प्रकार आजकल सभी कार्य ऑनलाइन हो रहे हैं। आप भी अपनी सहयोग राशियों के साथ अपनी भूमिका, अपनी उपस्थिति दर्ज कर सकते हैं। कार्यक्रम तो हर हाल में हमने करना ही है। शक्ति व संबल आप लोगों के सहयोग के द्वारा ही प्राप्त होता है और होगा। परमपिता परमात्मा की कृपा से व दिव्यजनों, दिव्यात्माओं के साथ साथ पूज्य चरणों के आशीर्वाद से तो शक्ति सामर्थ्य व संबल निरन्तर प्राप्त हो ही रहा है। अतः शक्ति व

संबल के लिए आप लोग भी अपने सहयोग के हाथों को बढ़ाए रखना, उन्हें नीचे न होने देना। ईश्वर सबका कल्याण करे। दिव्यजन, दिव्यात्माएं अपने अमोघ आशीर्वादों से सबका अभिसिंचन करें। आप लोगो के स्नेह व सहयोग का आकांक्षी, आप लोगों का प्रियपात्र उस प्रभु का वरदपुत्र आचार्य महावीर सिंह।

यद्यपि उन दिनों यहाँ बोर्ड की परीक्षाएं भी चल रही होंगी। फिर भी हमने यह कार्यक्रम तो करना ही है। उसी के अनुरूप कार्यक्रम की समय सारिणी बनाई जा रही है जो निम्न प्रकार से हैं। सभी आत्मीयजनों को इस विषय की सूचना दे रहे हैं तथा उस कार्यक्रम को उत्साह व उमंग के साथ सम्पन्न करने के लिए उसमें अपना भरपूर सहयोग के लिए उसमें अपनी उपस्थिति दर्ज करने के लिए आमंत्रित भी कर रहे हैं।

3, 4 मई, 2021

प्रातः : 6 बजे से 7:30 बजे तक यज्ञ,
: 7:30 बजे से 8:15 बजे तक भजन,
: 8:15 बजे से 9 बजे तक उपदेश
सायं : 3:30 बजे से 4:45 बजे तक यज्ञ,
: 4:45 बजे से 6 बजे तक भजन,
: 6 बजे से 6:45 तक उपदेश,
6:45 बजे से 7 बजे तक संध्या व शांतिपाठ

5 मई, 2021

प्रातः : 6 बजे से 7:30 बजे तक यज्ञ,
: 7:30 बजे से 8:30 बजे तक भजन,
: 8:30 बजे से 9:30 बजे तक उपदेश,
: 9:30 बजे से 10बजे तक पूर्णाहुति का कार्यक्रम।

10 बजे से प्रसाद वितरण, जलपान और कार्यक्रम की समाप्ति।

इस देवस्थलि में एकत्रित होने वाले देवजनों में से वे देव जन जिनके मुंह से इस स्वर्ग स्थली पर ज्ञान गंगा प्रवाहित होगी।

पूज्य स्वामी आर्यवेश जी, प्रधान सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा

पूज्य स्वामी सवितानन्द जी, आर्य प्रतिनिधि सभा, झारखण्ड

पूज्य स्वामी आदित्यवेश जी, प्रधान, सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद् हरियाणा तथा अन्य संन्यासी व विद्वत्जन जिन्हें यज्ञदेव यहां आकर्षित कर ले आयेंगे।

वे स्वर सम्राट – जो अपने सरस स्वर लहरियों की झंकार से वातावरण को झंकृत करेंगे। यज्ञ के माहौल में अपनी मधुर सरस संगीत का रस घोलेंगे।

श्री संदीप आर्य जी, श्री मनोज कुमार जी, श्री सुनील कुमार शास्त्री, श्री संजय कुमार शास्त्री, श्रीमती नीतू आर्या, श्रीमती सरस्वती देवी।

जिन देवजनों से यज्ञ परिसर शोभायमान होगा। दिव्यात्माएं, दिव्यजन पूज्य चरण, इष्टों देवों के साथ–साथ मूर्त रूप से आप सभी आत्मीयजन, देवजन तथा यज्ञ की चुम्बकीय शक्ति से आने वाले सभी श्रद्धालुजन, यज्ञप्रेमीजन एवं आर्य समाज चम्बा के सभी सदस्य दयानन्द मठ चम्बा के सभी सदस्य, स्वामी सुमेधानन्द शिष्य मंडल के सदस्य तथा महर्षि दयानन्द आदर्श विद्यालय के छात्र वर्ग तथा सभी अध्यापक व कर्मचारी वर्ग।

यजमान यज्ञ के मान व सम्मान के गरिमामय पद की शोभा को बढ़ाने वाले यजमान के अभिलाषी सौभाग्यशाली जन अपने नाम पूर्व ही प्रेषित कर देने की कृपा करना।

आंखें आप लोगों के दर्शनों की प्यासी रहेंगी।

जिनकी रहेंगी वे लोग

आचार्य महावीर सिंह एवं दयानंद मठ प्रबंध समिति के सभी सदस्य, स्वामी सुमेधानन्द शिष्य मंडल के सभी सदस्य, महर्षि दयानन्द उच्च विद्यालय की प्राचार्या उपाचार्या सहित सभी अध्यापक वर्ग व समस्त छात्र–छात्राएँ व कर्मचारी वर्ग

जाट धर्मशाला, कुरुक्षेत्र में आयोजित सामवेद पारायण यज्ञ में सार्वदेशिक सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी का हुआ ओजस्वी उद्‌बोधन

जाट धर्मशाला, कुरुक्षेत्र में गत 4 से 6 अप्रैल, 2021 तक सामवेद पारायण यज्ञ का आयोजन किया गया। यज्ञ के संयोजक महात्मा रणवीर निवासी ग्राम–कुटबी, जिला–मुजफ्फरनगर, उत्तर प्रदेश के निमंत्रण पर सभा प्रधान स्वामी आर्यवेश जी तथा युवा संन्यासी स्वामी आदित्यवेश जी 6 अप्रैल, 2021 को पूर्णाहुति के अवसर पर यज्ञ में सम्मिलित हुए। उनके अतिरिक्त स्वामी सत्यवेश जी, ब्र. सहसरपाल आर्य जी, श्री ओमपाल निरपुणा आदि भी कार्यक्रम में सम्मिलित रहे। यज्ञ के ब्रह्मा पद को गुरुकुल बरनावा के नव नियुक्त प्रधान आचार्य श्री अरविन्द कुमार शास्त्री जी ने सुशोभित किया तथा श्री सुनील शास्त्री एवं श्री गंगा शरण आर्य ने वेद पाठ के द्वारा अपनी महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई। इस यज्ञ में सर्वश्री शीलकराम मलिक, विनय सिंह तथा मनोज कुमार सपत्नीक यजमान बने और पूरी निष्ठा के साथ यज्ञ को सम्पन्न कराया। इस यज्ञ की व्यवस्था में मुख्य रूप से श्री दिलबाग सिंह जी, वैद्य ब्रह्म प्रकाश जी, श्री सेवक राम जी, श्री रामपाल जी, श्री मेहरपाल जी, श्री विजेन्द्र सहरावत पूर्व एस.एच.ओ., श्री अमर सिंह, श्री यशपाल, श्री शमशेर सिंह मान व श्री सत्यवीर शास्त्री आदि का विशेष योगदान रहा। महात्मा रणवीर जी व उनकी पूरी टीम ने तीन दिन तक चले इस यज्ञ में हजारों लोगों तक न केवल इसकी सुगन्धि पहुँचाकर पुण्य कमाया बल्कि विद्वानों के व्याख्यानों से भी श्रोताओं ने विशेष लाभ उठाया।

इस अवसर पर स्वामी आदित्यवेश जी ने अपने विचार प्रस्तुत करते हुए यह संदेश दिया कि हम सभी को संकल्प लेना चाहिए कि अपने जीवन में हम सभी यज्ञ को चरितार्थ करेंगे अर्थात् यज्ञ की भांति हम भी समर्पण, त्याग, परोपकार एवं निष्काम सेवा को अपने जीवन में अपनाकर यज्ञीय जीवन बनायेंगे।

स्वामी आर्यवेश जी ने अपने प्रवचन में जहाँ यज्ञ का महत्त्व एवं यज्ञ का सार उपस्थित श्रोताओं को समझाया वहीं उन्होंने मानव जीवन को सार्थक बनाने के लिए वेद के मन्त्रों के आधार पर बताया कि मनुष्य को सर्वप्रथम मनुष्य बनने की जरूरत है। उन्होंने कहा कि महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने मनुष्य की परिभाषा करते हुए बताया है कि अन्यों के सुख और दुःख को अपना सुख और दुःख समझने वाला व्यक्ति ही मनुष्य कहलाने का अधिकारी है। स्वामी जी ने यम, नियमों की व्याख्या करते हुए औरों के प्रति कैसा व्यवहार करना चाहिए और अपने प्रति कैसा व्यवहार करना चाहिए बड़ी सरल भाषा में उपस्थित श्रोताओं को समझाया। ओजस्वी वाणी में की गई उनकी व्याख्या से श्रोता मन्त्र मुग्ध हो गये।

यज्ञ के ब्रह्मा आचार्य अरविन्द कुमार शास्त्री जी ने अपने वक्तव्य में कहा कि जो लोग यज्ञ को और धर्म को छोड़ देते हैं तो यज्ञ और धर्म उनको छोड़ देता है। जो लोग ईश्वर को छोड़ देते हैं ईश्वर उनको छोड़ देता है। आचार्य अरविन्द कुमार ने यजमानों तथा उपस्थित लोगों को आशीर्वाद एवं शुभकामनाएं दी। कार्यक्रम के उपरान्त सभी विद्वानों का सम्मान किया गया। इस अवसर पर ब्रह्मभोज की समुचित व्यवस्था भी की गई थी। समारोह में स्वामी आर्यवेश जी को उनके कई पुराने सहयोगी एवं मित्र मिले जिन्होंने अपनी पुरानी स्मृतियाँ प्रस्तुत करके अपने अनुभव सुनाये। उन्होंने नये सिरे से आर्य समाज के कार्य करने का आश्वासन भी दिया।

महर्षि दयानंद विश्वविद्यालय रोहतक में दयानंद चेयर के अध्यक्ष डॉ. रवि प्रकाश का आर्य समाज ने किया स्वागत

महर्षि दयानंद विश्वविद्यालय में दयानंद चेयर स्थापित हुई है। इस चेयर के अध्यक्ष पद पर आर्य समाज के प्रतिष्ठित वैदिक विद्वान डॉ रवि प्रकाश आर्य को नियुक्त किया गया है। डॉ रवि प्रकाश देश विदेश में वैदिक विचारधारा व महर्षि दयानंद द्वारा वेदों के संदर्भ में बताए गए सिद्धांतों को देश दुनिया में प्रचारित व प्रसारित करने के लिए जाने जाते हैं। 31 मार्च को महर्षि दयानंद विश्वविद्यालय में उन्होंने नियुक्ति प्राप्त की। 1 अप्रैल, 2021 को स्वामी इंद्रवेश विद्यापीठ टिटौली के प्रो. श्योताज सिंह सभागार में आर्य समाज के सर्वोच्च संगठन सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा नई दिल्ली के प्रधान स्वामी आर्यवेश, संन्यास आश्रम गाजियाबाद के प्रधान स्वामी चंद्रवेश, मिशन आर्यावर्त के निदेशक स्वामी आदित्यवेश, बेटी बचाओ अभियान की राष्ट्रीय अध्यक्ष बहन पूनम आर्या, राष्ट्रीय संयोजक बहन प्रवेश आर्या, सहित आर्य समाज के गणमान्य अधिकारियों ने डॉक्टर रवि प्रकाश आर्य का ओ३म पट्टिका, स्मृति चिन्ह व महर्षि दयानंद का चित्र देकर सम्मान किया। स्वामी आर्यवेश जी ने इस अवसर पर कहा कि महर्षि दयानंद विश्वविद्यालय में दयानंद चेयर की स्थापना अपने आप में ऐतिहासिक कार्य की शुरुआत है। आर्य समाज बहुत लंबे समय से इसकी मांग भी कर रहा था। स्वामी जी ने यूजीसी का धन्यवाद ज्ञापित भी

किया। डॉ रवि प्रकाश आर्य के बारे में बोलते हुए उन्होंने बताया कि डॉ रवि प्रकाश आर्य देश दुनिया में वेदों में विज्ञान आदि गंभीर विषयों पर अपने विचार रखने के लिए जाने जाते हैं। निश्चय ही उनके इस पद पर आने से वेदों तथा महर्षि दयानंद की विचारधारा को जन जन तक पहुंचाने का अद्भुत कार्य प्रारंभ होगा। डॉ रवि प्रकाश आर्य ने कहा कि दयानंद चेयर के माध्यम से कुछ विशेष बिंदुओं के ऊपर कार्य प्रारंभ किया जाएगा। जिसमे प्रथम तो प्राचीन भारतीय वैदिक ज्ञान विज्ञान संस्कृति पर शोध किये जायेंगे। छोटे छोटे कोर्स प्रारम्भ किये जायेंगे। जो विश्वविद्यालय में पढ़ने वाले विद्यार्थियों के लिए होंगे। दूसरे अपने अतीत में रुचि रखने वाले विद्यार्थियों के लिए होंगे ताकि वो अपने गौरवशाली इतिहास से प्रेरणा ले सकें। जहां अंतरराष्ट्रीय स्तर की बड़ी बड़ी कॉन्फ्रेंस वेद विज्ञान आदि विषयों पर आयोजित की जाएंगी वहीं छोटे– छोटे सेमिनार भी निरन्तर चलाये जाएंगे। उन्होंने बताया कि यह चेयर यूजीसी द्वारा 7 वर्ष के लिए बनाई गई है। यह आगे बढ़ाई भी जा सकती है। उन्होंने आर्य समाज द्वारा किये गए सम्मान के लिय आभार प्रकट किया। बहन पूनम आर्या ने कहा कि वेदों को महर्षि दयानंद ने सब सत्य विद्याओं की पुस्तक बताया है। उस पर कार्य होगा तो पूरे विश्व में वेदों के प्रति लोगों का रुझान व सम्मान बढ़ेगा। स्वामी आदित्यवेश ने कहा कि रविप्रकाश आर्य समाज के गौरव हैं,उनके इस पद पर नुयक्त होने के बाद निश्चित रूप से वेदों पर महर्षि दयानंद के दृष्टिकोण से शोध करने की एक ऐतिहासिक शुरुआत होगी। जिसका लाभ सम्पूर्ण विश्व को मिलेगा।

इस अवसर पर प्रसिद्ध आर्य भजनोपदेशक रामनिवास आर्य पानीपत, बलराज आर्य पूर्व एसडीओ, जागे राम आर्य, राजबीर वशिष्ठ, डॉ. नारायण सिंह , राजेश आर्य, सत्यवान आर्य, राजेन्द्र आर्य, वीरेन्द्र कुंडू, कृष्ण प्रजापत आदि भी उपस्थित रहे।

प्रसिद्ध दानवीर स्व. राव रघुनाथ सिंह आर्य की स्मृति में दिनांक 15 मार्च, 2021 को यादव धर्मशाला नजफगढ़ में कार्यक्रम का हुआ आयोजन

सभा प्रधान स्वामी आर्यवेश जी तथा सभा मंत्री प्रो. विट्ठलराव आर्य जी रहे मुख्य अतिथि

आर्य समाज नजफगढ़ एवं स्व. राव रघुनाथ सिंह आर्य स्मृति समिति के संयुक्त तत्वावधान में गत् 15 मार्च, 2021 को महादानी श्री रघुनाथ सिंह आर्य की स्मृति में एक भव्य कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस अवसर पर सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी मुख्य अतिथि के रूप में कार्यक्रम में पधारे तथा उनके अतिरिक्त सभा मंत्री प्रो. विट्ठलराव आर्य, विशिष्ट अतिथि रहे, उनके अतिरिक्त नव दीक्षित युवा संन्यासी सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद् हरियाणा के प्रधान स्वामी आदित्यवेश जी, डॉ. राजन जी, स्वामी कृष्णानन्द जी, स्वामी शिवानन्द जी, साध्वी पुष्पा यति शास्त्री, कन्या गुरुकुल लोआ कलां की आचार्या, प्रसिद्ध आर्य भजनोपदेशक श्री रामनिवास आर्य एवं श्री नारायण सिंह आर्य आदि विद्वान एवं विदुषियों ने कार्यक्रम में सम्मिलित होकर श्रोताओं को सम्बोधित किया।

स्मृति सभा के अवसर पर विशेष यज्ञ का आयोजन किया गया जिसके ब्रह्मा योगाचार्य योगेन्द्र जी ने कुशलता के साथ अपने दायित्व का निर्वहन किया। कार्यक्रम प्रारम्भ होने से पूर्व श्री रघुनाथ सिंह आर्य जी की प्रतिमा का यादव भवन के मुख्य द्वार पर अनावरण किया गया। यादव सभा के प्रधान श्री प्रीतिपाल सिंह खेहरा, श्री बिल्लू पहलवान, श्री लिच्छीराम प्रधान, श्री जिले सिंह आर्य, श्री तेजराम आदि उपस्थित रहे। स्व. श्री रघुनाथ सिंह आर्य जी की धर्मपत्नी सुखमा देवी तथा उनकी सभी पुत्रियाँ, उनके दामाद तथा परिवार के सभी गणमान्य सदस्य आर्य समाज खेरा के अधिकारी, माता मूर्तिदेवी आर्य समाज, नजफगढ़ के अधिकारी तथा समाज के अन्य गणमान्य लोग समारोह में सम्मिलित हुए। नजफगढ़ नगर एवं क्षेत्र के सैकड़ों प्रमुख लोगों ने सभा प्रधान स्वामी आर्यवेश जी और सभा मंत्री प्रो. विट्ठलराव जी का माल्यार्पण व शॉल भेंट कर सम्मान किया। अपने उद्बोधन में सभा प्रधान स्वामी आर्यवेश जी ने राव रघुनाथ सिंह जी को आर्य समाज के महादानी भामाशाह की उपाधि से सम्बोधित करते हुए कहा कि रघुनाथ सिंह जी एक परोपकारी, धर्मात्मा एवं समाजसेवी व्यक्ति थे। वे लोगों के सुख–दुःख में सदैव आगे बढ़कर शामिल रहते थे। प्रतिदिन व्यायाम व दैनिक यज्ञ उनकी दिनचर्या का हिस्सा था। अनेक संस्थाओं एवं गुरुकुलों में उन्होंने दिल खोलकर दान दिया और सहयोग करते रहते थे। ऐसे महान व्यक्तित्व के निधन से निःसंदेह आर्य समाज एवं राष्ट्र की अपूर्णीय क्षति हुई है। हम सभी को उनके जीवन से प्रेरणा लेनी चाहिए। स्वामी जी ने बताया कि रघुनाथ सिंह जी स्वामी इन्द्रवेश जी एवं स्वामी अग्निवेश जी के अनन्य सहयोगी थे। वे स्वामी द्वय के सभी कार्यों में बढ़–चढ़कर भाग लेते थे और सहयोग करते थे।

सभा मंत्री प्रो. विट्ठलराव आर्य जी ने प्रसिद्ध समाजसेवी, दानवीर श्री रघुनाथ सिंह जी के जीवन को वर्तमान युवा पीढ़ी के लिए विशेष प्रेरणा देने वाला बताया। इस कार्यक्रम का संयोजन श्री जिले सिंह आर्य जी ने किया। श्री जिले सिंह आर्य जी आर्य समाज के कर्मठ कार्यकर्ता तथा स्व. रघुनाथ सिंह जी के विशेष सहयोगियों में प्रमुख हैं। वे अत्यन्त उत्साही एवं निष्ठावान तथा समर्पित व्यक्तित्व के धनी हैं। श्री रघुनाथ सिंह जी की प्रतिमा के अनावरण के इस कार्यक्रम को एक सफल आयोजन के रूप में सम्पन्न करके श्री जिले सिंह आर्य ने अपनी कर्मठता का परिचय दिया है। कार्यक्रम के अन्त में सभी संन्यासियों, विद्वानों एवं उपदेशकों का परिवार की ओर से विशेष सम्मान किया गया।

स्व. प्रधान श्री रघुनाथ आर्य का संक्षिप्त जीवन परिचय

महान दानवीर व डावर के भामाशाह स्व. श्री रघुनाथ सिंह आर्य का जन्म 15 मार्च, 1929 को नजफगढ़ के खैरा गांव में पिता श्री तेजराम आर्य व माता श्रीमती मूर्ति देवी के घर हुआ था। श्री रघुनाथ जी बचपन से ही मेधावी थे उन्होंने अपनी 10वीं तक की शिक्षा सी.आर.जैड. हाईस्कूल सोनीपत से 1949 में पूरी की। मार्च, 1949 में श्री रघुनाथ आर्य की शादी मोलाहेड़ा, गुरुग्राम की श्रीमती सुखमा देवी से हुई। रघुनाथ आर्य जी के 6 लड़कियाँ हैं। आपने सन् 1954 से टी.सी.एम. में ऑपरेटर के पद पर 10 वर्ष नौकरी की। 1961 से 1970 तक आप खैरा गांव के सरपंच रहे तथा इस दौरान आपने गांव व समाज हित में अनेक सराहनीय कार्य किये। सन् 1974 से 1995 तक आप आर्य समाज नजफगढ़ के प्रधान रहे। आपकी अध्यक्षता में कई बार 100–100 किलो घृत से यज्ञ भी किये गये। आर्य समाज के प्रधान पद से त्याग पत्र देकर आपने आर्य समाज शिवाजी मार्ग की स्थापना की। सन् 1992 में नन्दा एन्क्लेव गोपालनगर में 200 वर्ग गज जमीन दान देकर आर्य समाज मंदिर का निर्माण करवाया। सन् 1996 में आपने खैरा गांव में आर्य समाज भवन बनवाया। 1997 में आपने यादव समाज के लिए 750 वर्ग गज का प्लॉट दान में दिया और जिस पर आज भव्य यादव भवन बना हुआ है। 2007 में आपने गांव खेड़ी खुमार व खातीवास में आर्य समाज की स्थापना की। सन् 1975 में गांव खेड़ा में शहीद राव लक्ष्मीचन्द ट्रस्ट का निर्माण किया। आपके माध्यम से अनेकों संस्थाओं को गुरुकुल व गोशालाओं को विपुल धनराशि दान दी गई। आप लोगों के सुख–दुःख में सदैव सहयोगी रहते थे। आपका व्यक्तित्व एक प्रतिष्ठित समाजसेवी, कर्मठ आर्यनेता एवं उदार दानवीर के रूप में विख्यात है। 20 जनवरी, 2020 को 93 वर्ष की आयु में प्रातः 3 बजे आपने अपना नश्वर देह छोड़कर महाप्रयाण किया।

पृष्ठ 2 का शेष

सत्यार्थ प्रकाश में आधुनिक विज्ञान

सूर्य्य – चन्द्र के बीच में भूमि आती है तब चंद्रमा का कुछ भाग, पृथ्वी को छाया से प्रकाशित नही हो पाता है जिससे हमें चंद्रमा कुछ कटा सा दिखाई देता है जिसे हम 'चन्द्रग्रहण' कहते हैं। अतः स्वामी दयानंद जी द्वारा लिखा उपरोक्त तथ्य पूर्णतः विज्ञान सम्मत है।

13, पृष्ठ 330 एंव 333, समुल्लास 12 में– 'पदार्थ 'नष्ट' अर्थात् अदृश्य होते हैं परन्तु अभाव किसी का नही होता, इसी प्रकार अदृश्य होने से जीव का भी अभाव न मानना चाहिये।' – – दो पृष्ठ के बाद तीसरे पृष्ठ पर – – – 'जो वस्तु है, उसका अभाव कभी नही होता'

विज्ञान के तथ्य– रसायन विज्ञान एंव भौतिक विज्ञान के 'पदार्थों के अविनाशिता के नियम' के अनुसार कोई पदार्थ, न तो उत्पन्न किया जा सकता है और न ही नष्ट किया जा सकता है अर्थात पदार्थ अविनाशी हैं। केवल उनकी अवस्थाएं जैसे ठोस, द्रव्य और गैस यानी, वायुरुप में अदला बदला जा सकता है। इसके अतिरिक्त विभिन्न पदार्थों में रसायनिक क्रिया कराके अन्य रसायनों में परिवर्तित किया जा सकता है जिनके गुण एंव व्यवहार बिलकुल भिन्न होते हैं। किसी भी पदार्थ का दहन होना, लोहा में जंग लगना, दूध से दही बनाना, रसायनिक क्रिया से होते हैं। अतः स्वामी दयानंद जी द्वारा लिखा उपरोक्त तथ्य पूर्णतः विज्ञान सम्मत है।

14, पृष्ठ 347, समुल्लास 12 में– " नास्तिक– हे मूढ़! जगत का कर्त्ता कोई नहीं, किन्तु जगत् सवयं सिद्ध है।

आस्तिक– कर्त्ता के विना कोई कर्म और कर्म के विना कोई कार्य नहीं हो सकता। इसलिये ईश्वर जगत् का कर्त्ता है। जो जगत् स्वयं सिद्ध होता तो तुम्हारे खेत के गेहूं स्वयं पिसान, रोटी बन, तुम्हारे पास आकर, मुख में घुस कर, पेट में चली जाय तो विना ईश्वर के जगत् स्वयं बन जाय।"

विज्ञान के तथ्य– विंदु 4 में विज्ञान के लिखे पहले नियम से हम जानते हैं कि कोई पदार्थ बगैर बल लगाये, अपने आप गतिमान नही हो सकता है। अतः बगैर कर्त्ता के कार्य के कोई कार्य नही हो सकता है। यही बात यहाँ ऋषि ने लिखा है। जब कोई कार्य बगैर किसी के किये नही हो सकता है अतः इस विश्व एंव ब्रह्माडं का सृजन करने वाला कोई न कोई कर्त्ता होगा ही, जिसे ही ईश्वर कहा जाता है। अतः स्वामी दयानंद जी द्वारा लिखा उपरोक्त तथ्य पूर्णतः विज्ञान सम्मत है।

15, पृष्ठ 375, समुल्लास 12 में– "उत्तर – यह तुम्हारी बात लड़केपन की है। प्रथम तो देखो, जहाँ छिद्र और भीतर के वायु का योग बाहर के वायु के साथ न हो तो वहाँ अग्नि जल ही नही सकता। जो इसको प्रत्यक्ष देखना चाहो तो किसी फानूस में दीप जलाकर सब छिद्र बंद करके देखो तो दीप उसी समय बुझ जायगा। जैसे पृथ्वी पर रहने वाले मनुष्य आदि प्राणी बाहिर के वायु के योग के बिना नही जी सकते, वैसे अग्नि भी नही जल सकता।"

वैज्ञानिक तथ्य– रसायन विज्ञान के अनुसार किसी पदार्थ के दहन यानी ज्वलन के लिए आक्सीजन गैस का होना अतिआवश्यक है। आक्सीजन गैस हवा का एक प्रमुख घटक होता है। फानूसों, लालटेनों, पेट्रोमैक्सों आदि में हवा के अंदर घुसने के लिए नीचे कई छोटे छोटे छिद्र तथा दहन के पश्चात कार्बन डाइआक्साइड आदि गर्म हवा के बाहर निकलने के लिए ऊपर छोटे छोटे छिद्र होना अतिआवश्यक है, अन्यथा इन उपकरणों में तेलों का दहन नही हो सकेगा जिससे प्रकाशादि नही हो सकता है। अतः स्वामी दयानंद जी द्वारा लिखा उपरोक्त तथ्य पूर्णतः विज्ञान सम्मत है।

16, पृष्ठ 398, समुल्लास 13 में– "प्रश्न– क्या मुर्दे के धुआं में दुर्गंध नहीं होता?

उत्तर – हाँ! जो अविधि से जलावे तो थोड़ा सा होता है, परंतु गाड़ने आदि से बहुत कम होता है।" इसी के साथ अंत्येष्टि की विधि लिखा है जो विज्ञान सम्मत है।

विज्ञान के तथ्य– यदि शव को अविधि यानी चारों तरफ से प्रचुर, प्रचंड ज्वालाओं से नही जलाई जाती है तब शव का भली भांति दहन नही हो पाता है जिससे मांस आदि के भाप यानी वाश्प, धुवाँ, फैलने से दुर्गधं होती है। अतः यह विधि विज्ञान सम्मत है।

17, पृष्ठ 418, समुल्लास 13 में– "91. उन दिनों के क्लेश के पीछे तुरंत सूर्य अंधियारा हो जाएगा और चांद अपनी ज्योति ना देगा, तारे आकाश से गिर पड़ेंगे और आकाश की सेना डिग जाएगी।।

समीक्षक– वाह जी ईशा! तारों को किस विद्या से आपने गिर पड़ना जाना और आकाश की सेना कौनसी है, जो डिग जायगी? जो कभी ईशा थोड़ी भी विद्या पढ़ता, तो अवश्य जान लेता कि यह तारे सब भूगोल हैं, क्योंकर गिरेगें।"

विज्ञान के तथ्य– विज्ञान के भूगोल शास्त्र के अनुसार हम जानते है कि भूमंडल में तारे कभी नही गिरते हैं और वह निर्धारित मार्ग पर निर्धारित गति से निरतंर घूमते रहते हैं। अतः बाइबिल में लिखा तथ्य असत्य है। अतः स्वामी दयानंद जी द्वारा लिखा उपरोक्त तथ्य पूर्णतः विज्ञान सम्मत है।

18, पृष्ठ 418, समुल्लास 13 में– "आकाश और पृथ्वी टल जाएंगे, परंतु मेरी बातें कभी न टलेंगी।।

समीक्षक – यह भी बात अविद्या और मूर्खता की है। भला! आकाश हिल कर कहाँ जायगा? जब आकाश अतिसूक्ष्म होने से नेत्र से दीखता नही तो इसका हिलना कौन देख सकता है। और अपने मुख से अपनी बड़ाई करना अच्छे मनुष्यों का काम नहीं।।92।"

विज्ञान के तथ्य– विज्ञान के रसायन शास्त्र से हम जानते हैं कि पृथ्वी चारों ओर से रगंहीन, गंधहीन और पूर्णतः पारदर्शी वायु से घिरा हुआ है जिसे ही आकाश कहते हैं, जो आँखो से दिखाई नही देता है। जब यह वायु पृथ्वी को चारों ओर से घेर रखा है तब यह हिल कर कहीं नही जा सकता है। अतः स्वामी दयानंद जी द्वारा लिखा उपरोक्त तथ्य पूर्णतः विज्ञान सम्मत है।

19, पृष्ठ 430, समुल्लास 13 में– "समीक्षक– अब देखिए इन गपोड़े पुराणों से भी बढ़कर है, वा नहीं? ईसाईयों का ईश्वर कोप करते समय बहुत दुःखित हो जाता होगा और जो उसके कोप के कुंड भरे हैं, क्या उसका कोप जल है वा अन्य द्रवित पदार्थ है कि जिससे कुंड भरे हैं, और सौ कोस तक रुधिर का बहना असंभव है, क्योंकि रुधिर वायु लगने से झट जम जाता है, पुनः क्यों कर बह सकता है? इसलिए ऐसी बातें मिथ्या होती हैं।।132।।"

विज्ञान के तथ्य– हम सभी प्रत्यक्ष अनुभूति से जानते जब भी किसी प्राणी को चोट लगने से या कटने फटने से जब रुधिर बहता है तब वह कुछ ही क्षणों में जम जाता है। विज्ञान के प्राणी शास्त्र से भी जानते हैं कि रुधिर मिनटों में जम जाता है और वह सौ कोस, क्या एक कोस भी नही बह सकता है। अतः स्वामी दयानंद जी द्वारा लिखा उपरोक्त तथ्य पूर्णतः विज्ञान सम्मत है।

20, पृष्ठ 449, समुल्लास 14 में– "44. मेरा मालिक सूर्य्य को पूर्व से लाता है बस तू पश्चिम से ले आ, जो काफिर था हैरान हुआ, निश्चय अल्लाह पापियों को मार्ग नहीं दिखलाता।।

समीक्षक– देखिए यह अविद्या की बात! भला सूर्य्य न पूर्व से पश्चिम और ना पश्चिम से पूर्व कभी आता जाता है, वह तो अपनी परिधि में घूमता रहता है, इससे निश्चित जाना जाता है कि कुरान के कर्त्ता को खगोल और भूगोल विद्या न आती थी। जो पापियों को मार्ग नहीं बतलाता तो पुण्यात्माओं के लिए भी मुसलमानों के खुदा की आवश्यकता नहीं, क्योंकि धर्मात्मा तो धर्म मार्ग में ही होते हैं, – – – – भूल है।।4।।"

विज्ञान के तथ्य– विज्ञान के भूगोल शास्त्र के अनुसार हम जानते है कि भूमंडल में पृथ्वी अपनी धुरी पर घूमते हुए, सूर्य के चारों ओर आयताकार परिधि में निरतंर घूमती रहती है जिससे ही पूरी पृथ्वी पर दिन रात एंव गर्मी, बरसात एंव ठंडक के मौसम होते हैं। अतः कुरान में लिखा तथ्य असत्य है। अतः स्वामी दयानंद जी द्वारा लिखा उपरोक्त तथ्य पूर्णतः विज्ञान सम्मत है।

21, पृष्ठ 463, समुल्लास 14 में– "102. अल्लाह वह है जिसने खड़ा किया आसमानों को विना खंबे के देखते हो तुम उसको, – – दो लाइन छोड़ के – – ।। और वही है जिसने विछाया पृथ्वी को। उतारा आसमान से पानी बस बहे नाले साथ अन्दाजे के।। – –।।

समीक्षक– मुसलमानों का खुदा पदार्थ विद्या कुछ भी नहीं जानता था। जो जानता तो आसमान को खंबा लगाने की कथा कहनी, गुरुत्व न होने से, कछ भी आवश्यकता न थी। यदि खुदा स्वर्गरुप एक स्थान में रहता है, तो वह सर्वशक्तिमान और सर्वव्यापक नही हो सकता। और जो खुदा मेघविद्या जानता तो 'आकाश से पानी उतारा' लिखा, पुनः यह क्यों न लिखा कि 'पृथ्वी से पानी ऊपर चढ़ाया'। इससे निश्चय हुआ कि कुरान का बनाने वाला मेघ की विद्या को भी नहीं जानता था।"

विज्ञान के तथ्य– विज्ञान के भूगोल शास्त्र, भौतिक शास्त्र, रसायन शास्त्र के अनुसार हम जानते है कि आसमान किसी खंबा आदि पर नही टिका है बल्कि स्वंय गुरुत्वाकर्षण के कारण पृथ्वी को घेर रखा है। पृथ्वी को विछाया नही जा सकता क्योंकि यह चददर नही है बल्कि बहुत ही बड़ा गोला है। आसमान में कहीं पानी का टैंक नही है जहां से पानी उतार कर, निकाल कर बरसात कराया जा सके। सूर्य कि किरणों एंव प्राणियों के कार्य कलापों से पृथ्वी को गर्मी मिलती रहती है जिससे आकाश में समुद्र, नदी नालों आदि के जल गर्म होकर वाष्प बन कर आकाश में उड़ते हुए ऊपर उठते रहते हैं और ऊपर ठंडा होकर बादल और फिर इन्ही बादलों से बरसात होती है। अतः कुरान में लिखा तथ्य असत्य है। स्वामी दयानंद जी द्वारा लिखा उपरोक्त तथ्य पूर्णतः प्रत्यक्ष प्रमाण एंव विज्ञान सम्मत है।

22, पृष्ठ 464, समुल्लास 14 में– "105. और क्या सूर्य चंद्र को सदैव फिरने वाले।। निश्चय आदमी अवश्य अन्याय और पाप करने वाला है।।

समीक्षक– क्या चंद्र सूर्य सदा फिरते और पृथ्वी नहीं फिरती? जो पृथ्वी नहीं फिरे तो कई वर्ष का दिन रात हो। और जो मनुष्य निश्चय अन्याय और पाप करने वाला है तो कुरान से शिक्षा करनी व्यर्थ है। – – –।।105।।"

विज्ञान के तथ्य– हम सभी विज्ञान के भूगोल शास्त्र के अनुसार हम जानते है कि सूर्य, चद्रं एंव पृथ्वी सदैव फिरती यानी चलती रहती है जिससे ही विभिन्न मौसम एंव दिन रात होते रहते हैं। अतः स्वामी दयानंद जी द्वारा लिखा उपरोक्त तथ्य पूर्णतः प्रत्यक्ष प्रमाण एंव विज्ञान सम्मत है।

23, पृष्ठ 467, समुल्लास 14 में– "114. और वह लड़का, बस थे मां बाप उसके ईमान वाले, बस डरे हम यह कि पकड़ें उनको सरकशी में और कुफ्र में।। यहां तक कि पहुंचा जगह डूबने सूर्य्य की, पाया उसको डूबता था बीच चश्मे कीचड़ के।।

समीक्षक– भला! यह खुदा की कितनी बेसमझ है। – – दो लाइन छोड़कर – – – । अब आगे की अविद्या की बात देखिए कि इस किताब का बनाने वाला सूर्य्य को एक झील में रात को डूबा जानता है, फिर प्रातः काल निकलता है। भला! सूर्य्य तो पृथ्वी से बहुत बड़ा है, वह नदी वा झील वा समुद्र में कैसे डूब सकेगा। इससे यह विदित हुआ कि कुरान के बनानेवाले को भूगोल खगोल की विद्या नहीं थीं। जो होती तो ऐसी विद्याविरुद्ध बात क्यों लिख देते हैं।"

विज्ञान के तथ्य– हम सभी विज्ञान से जानते हैं कि पृथ्वी की अपेक्षा सूर्य कई गुना बड़ा है एंव करोड़ो किलामीटर दूर है। अतः सूर्य को पृथ्वी के किसी नदी नाले में एंव कीचड़ में डुबाने की बात पूर्णतः असत्य एंव काल्पनिक है।

24, पृष्ठ 481, समुल्लास 14 में– "149. जब कि हिलाई जावेगी पृथ्वी हिलाये जाने कर।। उड़ाए जावेंगे पहाड़ उड़ाए जाने कर।। बस हो जाएंगे भुनगे।। – – 10 लाइन छोड़कर – – – तारों के।।"

समीक्षक– अब देखिए कुरान बनाने वाले की लीला को! भला पृथ्वी तो हिलती ही रहती है उस समय भी हिलती रही होगी। इससे यह सिद्ध होता है कि कुरान बनाने वाला पृथ्वी को स्थिर जानता था! भला पहाड़ों को क्या पक्षीवत् उड़ा देगा? यदि भुनगे हो जावेगें तो भी सूक्ष्म शरीरधारी रहेंगे तो फिर उनका दूसरा जन्म क्यों नहीं?"

विज्ञान के तथ्य– हम सभी विज्ञान के भूगोल शास्त्र से जानते है कि पृथ्वी स्थिर नही है बल्कि निरतंर गतिशील रहती है जिससे ही विभिन्न मौसम एंव दिन रात होते रहते हैं। अतः स्वामी दयानंद जी द्वारा लिखा उपरोक्त तथ्य पूर्णतः प्रत्यक्ष प्रमाण एंव विज्ञान सम्मत है।

25, पृष्ठ 485, समुल्लास 14 में– "157. फट जावेगा आसमान, बस वह उस दिन सुस्त होगा।। और फरिश्ते होंगे ऊपर किनारों उसके के, – – – पांच लाइन छोड़कर – – – अपना।।

समीक्षक– वाह क्या फिलासफी और न्याय की बात है! भला आकाश भी कभी फट सकता है? क्या वह वस्त्र के समान है जो फट जावे? यदि ऊपर के लोक को आसमान कहते हैं तो यह बात विद्या से विरुद्ध है।"

विज्ञान के तथ्य– हम सभी विज्ञान के भूगोल शास्त्र के अनुसार जानते है कि हवा से ही आकाश बना है जो पृथ्वी को चारों ओर से घेरे हुए है। अतः आकाश का फटना असत्य एंव काल्पनिक है। अतः स्वामी दयानंद जी द्वारा लिखा उपरोक्त तथ्य पूर्णतः प्रत्यक्ष प्रमाण एंव विज्ञान सम्मत है।

26, पृष्ठ 486, समुल्लास 14 में– "161 इकट्ठा किया जावेगा सूर्य और चाँद।।

समीक्षक– भला सूर्य्य और चाँद कभी इकट्ठे हो सकते हैं। देखिए! यह कितनी बेसमझ की बात है। और सूर्य चंद्र ही के इकट्ठे करने में क्या प्रयोजन तथा अन्य सब लोकों को इकट्ठे न करने में क्या युक्ति है? ऐसी– ऐसी असंभव बातें परमेश्वरकृत कभी नही हो सकती है? विना अविद्वानों के अन्य किसी विद्वान् की भी नहीं होती।।161।।"

विज्ञान के तथ्य– हम सभी विज्ञान के भूगोल शास्त्र से जानते है कि सूर्य एंव चद्रंमा गोल एंव एक दूसरे से करोड़ों करोड़ों किलोमीटर दूर हैं जिससे उन्हे इकट्ठा नही किया जा सकता है। अतः स्वामी दयानंद जी द्वारा लिखा उपरोक्त तथ्य पूर्णतः प्रत्यक्ष प्रमाण एंव विज्ञान सम्मत है।

27, पृष्ठ 487, समुल्लास 14 में– "164. जब कि सूर्य लपेटा जावे।। और जब कि तारे गदले हो जावें।। और जब कि पहाड़ चलाये जावें।। और जब आसमान की खाल उतारी जावे।।

समीक्षक– यह बड़ी बेसमझ की बात है कि गोल सूर्यलोक कैसे लपेटा जावेगा? और तारे गदले क्योंकर हो सकेंगे? और पहाड़ जड़ होने से चलेंगे कैसे? और आकाश को क्या पशु समझा कि उसकी खाल निकाली जावेगी? यह बड़ी – – – बात है।।164।।"

विज्ञान के तथ्य– हम सभी विज्ञान के भूगोल शास्त्र से जानते है कि सूर्य गोल है अतः इसे लपेटना, तारों का गंदा होना, पहाड़ों का चलना एंव आसमान की खाल उतारना असत्य एंव काल्पनिक बातें हैं। अतः स्वामी दयानंद जी द्वारा लिखा उपरोक्त तथ्य पूर्णतः प्रत्यक्ष प्रमाण एंव विज्ञान सम्मत है।

28, पृष्ठ 487, समुल्लास 14 में– "165, और जब कि आसमान फट जावे।। और जब तारे उड़ जावें।। और जब दर्या चीरे जावें और जब कबरें जिला कर उठाई जावें।।

समीक्षक। वाह जी कुरान के बनाने वाले फिलासफर! आकाश को क्यों कर फाड़ सकेगा? और तारों को कैसे उड़ा सकेगा? और दर्या क्या लकड़ी है जो चीर डालेगा? और कबरें क्या मुर्दे हैं जो जिला सकेगा? यह सब बातें लड़के के सदृश हैं।।165।।"

विज्ञान के तथ्य– स्वामी दयानंद जी द्वारा लिखा तथ्य कि आसमान हवा होता है जिसे फाड़ा नही जा सकता है एंव तारे उड़ नही सकते हैं। नदियों को चीरा नही जा सकता है। अतः स्वामी दयानंद जी द्वारा लिखा उपरोक्त तथ्य पूर्णतः विज्ञान सम्मत है।

उन्होने अपनी लिखी पुस्तकों में ऐसे ही बहुत से विज्ञान सम्मत तथ्यों को लिखा है जो विज्ञान से सत्यापित होता है। हम यह देखते हैं कि अपने विचार, मत को सत्य सिद्ध करने के लिए प्रत्यक्ष प्रमाण के बाद, विज्ञान सम्मत तथ्य ही सर्वोच्च, सशक्त और अकाट्य कसौटी है। अतः हम सभी को विज्ञान के महत्व को अनुभव एंव स्वीकार करते हुए सभी आर्य नवयुवकों को विज्ञान शिक्षा प्राप्त करने और उसका उपयोग, वेद एंव अन्य शास्त्रों के ज्ञान के साथ स्वामी दयानंद जी के अधूरे कार्यों एंव आर्य समाज के प्रचार प्रसार, उन्नति करने में उद्यत, अग्रसर होना चाहिए।

समस्त पाठकों से निवेदन है कि इस लेखनी पर जो जो आपत्तियां एंव सुझाव हों, को मुझे भेजने का कष्ट करें जिससे इस लेखनी को अधिक प्रभावकारी एंव सार्थक संशोधन किया जा सके। इसके लिए मैं अति आभारी हूगाँ।

– ई–5 चंद्रा अपार्टमेंट, 115 कबीर मार्ग (निकट योजना भवन), लखनऊ–226 001 (उत्तर प्रदेश)
मोबाईल :– 9451734531, email-
vedpragupta@gmail.com

अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त आर्य संन्यासी पूज्य स्वामी अग्निवेश जी के बहुआयामी व्यक्तित्व तथा कृतित्व को संजोने के उद्देश्य से प्रकाशित किये जाने वाले 'स्मृति ग्रन्थ' हेतु अपने संस्मरण तथा पूज्य स्वामी अग्निवेश जी से सम्बन्धित सामग्री अतिशीघ्र भेजें

विलक्षण प्रतिभा के धनी, जुझारू व्यक्तित्व, सिद्धहस्त लेखक महर्षि दयानन्द जी की वैचारिक विरासत को आत्मसात करने वाले अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त आर्य संन्यासी पूज्य स्वामी अग्निवेश जी की स्मृतियों को जन–जन तक पहुँचाने के उद्देश्य से एक 'स्मृति–ग्रन्थ' का प्रकाशन करने की योजना बनाई गई है। पूज्य स्वामी अग्निवेश जी सप्तक्रान्ति के मुद्दों (जातिवाद मुक्त समाज, नशामुक्त समाज, नारी उत्पीड़न मुक्त समाज, पाखण्ड मुक्त समाज, भ्रष्टाचार मुक्त समाज, अन्याय व शोषण मुक्त समाज तथा साम्प्रदायिकता मुक्त समाज) जैसे विषयों के अतिरिक्त विभिन्न सामाजिक मुद्दों दबे–कुचले लोगों के उत्थान हेतु निरन्तर संघर्षरत रहे। इसके अतिरिक्त बाल मजदूरी एवं बंधुआ मजदूरी, जैसे विषयों के साथ–साथ उन्होंने विश्व की अनेकों समस्याओं को सुलझाने के लिए अपनी महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई थी। उनके सामाजिक, धार्मिक, राजनैतिक, शैक्षिक क्रिया कलापों से सम्बन्धित अथवा उनके प्रति आपके व्यक्तिगत विचार तथा उनके संस्मरण, उनके साथ फोटो, वीडियो आदि जो कुछ भी सामग्री आपके पास उपलब्ध हो उसे शीघ्रातिशीघ्र 7, जन्तर मन्तर रोड, नई दिल्ली–110001 के पते पर भिजवाने की कृपा करें। जिससे आप द्वारा भेजी गई सामग्री को 'स्मृति ग्रन्थ' में उचित स्थान प्राप्त हो सके।

सृष्टि सम्वत्सर और आर्य समाज स्थापना दिवस मनाया

महर्षि वेदार्ष महाविद्यालय गुरुकुल गौतमनगर, नई दिल्ली में 13 अप्रैल, 2021 तदनुसार विक्रम सम्वत् 2078, चैत्र शुदी प्रतिपदा को सृष्टि नव संवत्सर और आर्य समाज स्थापना दिवस हर्षोल्लास पूर्वक मनाया गया।

इस शुभ अवसर पर गुरुकुल के ब्रह्मचारियों, आचार्यों और गणमान्य व्यक्तियों ने सामूहिक बृहत यज्ञ का आयोजन किया जिसमें सम्वत्सर की विशेष आहुतियाँ दी गई।

यज्ञ के ब्रह्मा स्वामी प्रणवानन्द सरस्वती जी रहे और उन्होंने अपने प्रवचन में सम्वत्सर के महत्त्व और मानव जीवन में प्रकृति की उपयोगिता पर प्रकाश डाला।

स्वामी सोम्यानन्द सरस्वती जी ने सृष्टि सम्वत्सर की वास्तविक गणना के विषय में बताया कि ऋग्वेदादिभाष्य भूमिका के वेदोत्पत्ति विषय में महर्षि जी ने भूमिका के लिखने के समय की काल गणना नुसार विक्रम सम्वत् 1933 और सृष्टि सम्वत् 1,96,08,5276 लिखा है इनमें अन्तर 1043 वर्ष आता है इस आधार पर 2078 में 1043 जोड़ने पर वर्तमान सृष्टि सम्वत् 1,96,08,53121 ही आता है। महर्षि जी असत्य कथन नहीं करते। अन्य आचार्यों ने भी अपने विचारों से अवगत कराया। उत्सव समाप्ति पर प्रसाद वितरण किया गया। शांति पाठ के उपरान्त उत्सव समाप्त हुआ।

– स्वामी प्रणवानन्द सरस्वती

सर्वदानन्द महाराज का निर्माण दिवस मनाया

श्री सर्वदानन्द संस्कृत महाविद्यालय साधु आश्रम (अलीगढ़) पर वीतराग श्री सर्वदानन्द जी का निर्माण दिवस हर्षोल्लास पूर्वक मनाया गया।

इस अवसर पर यज्ञ का आयोजन किया गया। यज्ञ के ब्रह्मा स्वामी सोम्यानन्द सरस्वती जी रहे। वेद पाठ गुरुकुल के ब्रह्मचारियों ने किया। यज्ञ के उपरान्त श्रद्धांजलि सभा का आयोजन किया गया। सभा की अध्यक्षता स्वामी जी ने की।

महाविद्यालय के प्राचार्य डॉ. जीवन सिंह जी ने वीतराग संन्यासी श्री सर्वदानन्द जी के जीवन और कृतित्व पर विस्तार से प्रकाश डाला।

स्वामी सोम्यानन्द जी ने अपने सम्बोधन में कहा कि वर्तमान में कोरोना की महामारी से डरने की आवश्यकता नहीं है, प्रकृति और वर्तमान पर्यावरण के अनुसार खान–पान, आहार–विहार में सन्तुलन तथा सरकार के निर्देशों का पालन करके रोगों पर विजय पाई जा सकती है। अथर्ववेद के एक मन्त्र में कहा है कि हमें किसी भी परिस्थिति, प्राणी व कष्ट आदि से घबड़ाना नहीं चाहिए। पुरुषार्थ से समस्याओं पर सफलता अवश्य मिलती है। अगर कोरोना हो गया है तो नीम गिलोय का काढ़ा पियें और एक चम्मच काली मिर्च का चूर्ण, 2 चम्मच शहद और एक चम्मच अदरक का रस घोल दिन में तीन बार लें।

– प्राचार्य डॉ. जीवन सिंह

'योगेश्वर श्रीकृष्ण' पुस्तक अवश्य पढ़ें

– लेखक स्व. पं. चमूपति एम. ए.

'योगेश्वर श्रीकृष्ण' नामक पुस्तक पृष्ठ संख्या–256, अच्छे जिल्द एवं कागज में छपकर तैयार है। जिसकी कीमत 100/: रुपये है, जिस पर 25 प्रतिशत छूट उपलब्ध है। परन्तु भेजने में डाक व्यय खर्च होता है। अतः एक पुस्तक मंगाने के लिए डाक व्यय सहित 100/– रुपये भेजकर मंगा सकते हैं।

प्राप्ति स्थान – सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, ''महर्षि दयानन्द भवन'' 3/5 आसफ अली रोड, नई दिल्ली–2

दूरभाष :–011–23274771, 23260985

वैदिक धर्म की सदैव जय–जयकार हो

– दीपक कुमार छिल्लर

मन–मंदिर में सोचता हूँ,
क्या है आर्य समाज?
जहाँ ईश्वर है एक।
पालन करते सभी वैदिक नियमों का,
रास्ता है यह बिल्कुल नेक।
अच्छे संस्कारों का गुच्छा है यहाँ,
प्राप्त करता इसे प्रत्येक।
अंधकार को दूर कर रहे,
ऋषिवर देव दयानन्द जी के अनुगामी।
हम सभी वैदिक नियमों की डोरी पकड़कर,
नेक कर्म कर सीखते संस्कार अनेक।
जहां हर नर–नारी की पुकार हो।
वैदिक धर्म की सदैव जय–जयकार हो।।1।।

ऋषिवर के गीतों में जहां पाखण्डों का खण्डन होता,
ढोंगी बाबाओं के चक्कर में क्यों अपना तन, मन, धन खोता।
ऋषिवर की शिक्षाओं का पालन करके देखो,
मन से अपने गलत विचारों को दूर फेंको।
भव–सागर को पार करायेगा इस जग में,
महर्षि दयानन्द जी का सन्मार्ग अपनायेगा जो जीवन में।
वैदिक शिक्षाओं को जीवन भर अपनायेंगे,
सत्यार्थ प्रकाश के ज्ञान से हम संवर जायेंगे।
बुरी आदतों, व्यसनों से लड़ने की हुंकार भरो,
जीवन भर आर्य समाज का प्रचार करो।
एक अटूट विश्वास की ललकार हो।
वैदिक धर्म की सदैव जय–जयकार हो।।2।।

सात्विक आहार, अच्छा व्यवहार जीवन भर अपनाएं,
सादगी और ईमानदारी की रीति से तर जायें।
नेकी के पथ पर चलना हमें सिखाया,
हमेशा आदर्श के रूप में महर्षि दयानन्द जी को पाया।
जहां बड़ों का सम्मान, गुरुजनों के प्रति सेवा भाव,
जैसे कड़ी धूप में मिलती हमें पेड़ों की छांव।
जन–जन की यही पुकार हो,
आर्य समाज को अपनाने का प्रचार हो।
हम सभी में अच्छे संस्कारों का संचार हो।
वैदिक धर्म की सदैव जय–जयकार हो।।3।।

म. नं.–1022, ग्राम सभा कालोनी, सरदार पटेल झील के पास, पूठकलां, दिल्ली–110086
मो.:–9990422051

पंजीयन संख्या DELMUL/2005/15488
डाक पंजीकरण संख्या DL(c)-01/1213/2021-23
Licence to Post without prepayment of Postage. U (c)-289/2021-23

सोशल मीडिया के माध्यम से स्वामी आर्यवेश जी से जुड़ें

आर्य युवा सन्यासी व सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी से जुड़ने के लिए इस लिंक पर क्लिक करें www-facebook-com/SwamiAryavesh व फेसबुक पेज को लाइक करें व अन्य मित्रों को भी प्रेरित करें।

ई–मेल : aryavesh@gmail.com
Tel. :-011-23274771

प्रतिष्ठा में :–

अवितरण की दशा में लौटाएँ –
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा
"दयानन्द भवन" 3/5 आसफ अली रोड, नई दिल्ली–110002

स्वामी इन्द्रवेश विद्यापीठ आश्रम, टिटौली, रोहतक में दिनांक 31 मार्च एवं 1 अप्रैल, 2021 को

महात्मा फग्गूराम (सोनी महात्मा) की स्मृति में किये गये अनुकरणीय कार्यक्रम का हुआ भव्य समापन

संन्यासियों, उपदेशकों, कार्यकर्ताओं एवं समाज के प्रतिष्ठित महानुभावों को किया गया सम्मानित

दिनांक 31 मार्च व 1 अप्रैल, 2021 को स्वामी इन्द्रवेश विद्यापीठ आश्रम, टिटौली, रोहतक, हरियाणा में स्व. महात्मा फग्गूराम (सोनी महात्मा) की पुण्य तिथि के अवसर पर एक भव्य कार्यक्रम का आयोजन किया गया जिसमें वयोवृद्ध संन्यासी स्वामी चन्द्रवेश जी महाराज (वेदाचार्य, व्याकरणाचार्य तथा दर्शनाचार्य), सभा प्रधान स्वामी आर्यवेश जी, युवा संन्यासी स्वामी आदित्यवेश जी, स्वामी सोम्यानन्द जी, बहन पूनम आर्या एवं बहन प्रवेश आर्या, प्रसिद्ध आर्य भजनोपदेशक श्री राम निवास आर्य आदि ने दो दिन तक अपने विचारों से श्रोताओं को वेदज्ञान के द्वारा अनुप्राणित किया। कार्यक्रम प्रातः एवं दोपहर विद्यापीठ आश्रम में तथा रात्रि को टिटौली ग्राम में आयोजित किया गया। प्रातः 8 से 10 बजे तक यज्ञ, 10 से 1 बजे तक भजनों एवं व्याख्यान का कार्यक्रम तथा रात्रि 8 से 11 बजे तक भजनों तथा व्याख्यान का कार्यक्रम किया गया। इस कार्यक्रम के दौरान स्वामी इन्द्रवेश विद्यापीठ आश्रम में दोनों दिन महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय के लगभग 200 छात्र एवं छात्राएँ सम्मिलित रहे और उन्होंने आर्य समाज तथा महर्षि दयानन्द जी की विचारधारा को जानने व समझने का सौभाग्य प्राप्त किया। प्रातःकाल 8 से 10 बजे तथा सायंकाल 4 से 6 बजे तक यज्ञ का विशेष कार्यक्रम स्वामी चन्द्रवेश जी महाराज के ब्रह्मत्व में चला और कार्यक्रम का पूरा संयोजन स्वामी आदित्यवेश जी ने किया।

विदित हो कि स्व. महात्मा फग्गूराम के योग्य सुपुत्र श्री बलराज वर्मा, सेवानिवृत्त एस.डी.ओ. प्रतिवर्ष अपने पूज्य पिता जी की स्मृति में यह कार्यक्रम विभिन्न संस्थाओं या स्थानों पर आयोजित करते हैं। वे उच्च कोटि के संन्यासियों, विद्वानों एवं भजनोपदेशकों को आमंत्रित करके वेद प्रचार की धूम मचाते हैं और उन्हें श्रीफल, शॉल तथा दक्षिणा आदि से सम्मानित करते हैं। इसी प्रकार सैकड़ों छात्र–छात्राओं एवं सामाजिक कार्यकर्ताओं को भी श्री बलराज वर्मा शॉल आदि भेंट कर सम्मानित करते हैं। इस वर्ष यह कार्यक्रम उन्होंने स्वामी इन्द्रवेश विद्यापीठ आश्रम, टिटौली में आयोजित करने का निश्चय किया और अपनी ओर से लगभग एक हजार पुस्तकों एवं सैकड़ों शॉल व स्मृति चिन्हों का वितरण करके कार्यक्रम में सम्मिलित होने वाले न केवल महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय के छात्र–छात्राओं को बल्कि गांव की महिलाओं एवं पुरुषों को भी पुस्तक एवं प्रसाद वितरण करके उत्साहित किया। इस कार्यक्रम में दयानन्द शोध पीठ, महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय, रोहतक के नवनियुक्त अध्यक्ष प्रसिद्ध वैदिक विद्वान् डॉ. रवि प्रकाश आर्य, संस्कृत विभाग के पूर्व अध्यक्ष डॉ. बलवीर आचार्य को भी आमंत्रित कर सम्मानित किया गया। इनके अतिरिक्त आर्य समाज टिटौली, आर्य समाज खिडवाली, आर्य समाज सांघी के प्रमुख कार्यकर्ताओं एवं बेटी बचाओ अभियान की सभी कार्यकर्ता बहनों को भी सम्मानित किया गया। इसी प्रकार आर्य साधिका मण्डल की कार्यकर्ताओं को भी सम्मानित किया गया। दोनों दिन ऋषिलंगर की समुचित व्यवस्था श्री बलराज वर्मा की ओर से की गई थी। गांव

के कार्यक्रम में प्रसिद्ध आर्य भजनोपदेशिका विदुषी बहन कल्याणी आर्या एवं कु. तनू आर्या का भी प्रभावशाली कार्यक्रम लोगों को सुनने को मिला। कार्यक्रम की विशेषता यह रही कि श्रोताओं को विशेष रूप से प्रेरणा दी गई कि अपने माता–पिता व बुजुर्गों का सम्मान करना सीखें और सम्मान करने के लिए उनके बताये हुए रास्ते पर चलने का संकल्प लें। महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय के छात्र–छात्राओं को सम्बोधित करते हुए स्वामी आर्यवेश जी ने विशेष रूप से इस बात पर बल दिया कि वर्तमान समय में संस्कारों एवं शिक्षा की कमी के कारण युवा पीढ़ी अपने बुजुर्गों से विमुख होती जा रही है। जिसके परिणामस्वरूप न उनकी सेवा हो पाती है और न ही उनके अनुभवों का लाभ युवाओं को मिल पाता है। भौतिकवाद की आंधी में नैतिक मूल्य समाप्त हो रहे हैं, परिवारों में परस्पर सहयोग एवं स्नेह का वातावरण खत्म हो रहा है और बुजुर्ग लोग अत्यन्त उपेक्षित हो रहे हैं। ऐसे में श्री बलराज वर्मा द्वारा चलाये जा रहे इस कार्यक्रम से युवकों को प्रेरणा लेनी चाहिए और प्राचीन वैदिक संस्कृति के अनुरूप अपने माता–पिता, बड़े–बुजुर्गों के ऋण एवं उपकारों को कभी भी नहीं भूलना चाहिए। स्वामी आर्यवेश जी ने श्री बलराज वर्मा का हृदय से कोटिशः धन्यवाद करते हुए उनकी मुक्त कंठ से प्रशंसा की और कहा कि वे वेद के उस मन्त्र को चरित्रार्थ कर रहे हैं जिसमें कहा गया है –

अनुव्रतः पितुः पुत्रो, माता भवतु सम्मनाः।
जाया पत्ये मधुमतीम्, वाचं वदतु शन्तिवाम्।।

अर्थात् अपने माता–पिता के व्रतों को पूरा करने वाले उनके संकल्पों को आगे बढ़ाने वाले जो पुत्र–पुत्रियाँ होते हैं वे सही अर्थों में अपने माता–पिता के अनुयायी होते हैं। इस कार्यक्रम में स्वामी आदित्यवेश जी का युवाओं के लिए ओजस्वी उद्बोधन एवं बहन पूनम आर्या जी का योग विषय पर प्रेरणादाई प्रवचन सभी युवाओं को विशेष रूप से प्रभावित करने वाला था। प्रसिद्ध आर्य भजनोपदेशक श्री रामनिवास आर्य ने देशभक्तों एवं क्रांतिकारियों से सम्बन्धित जोशीले भजन सुनाकर युवाओं को प्रेरित किया और राष्ट्र के प्रति अपने दायित्व को समझने की प्रेरणा दी।

इस दो दिवसीय कार्यक्रम में व्यवस्था का पूरा दायित्व बहन प्रवेश आर्या एवं श्री ऋषिराज शास्त्री ने संभाला और श्री वीरेन्द्र कुण्डू ने गांव के प्रचार कार्य को अपने पुरुषार्थ से अत्यन्त सफल बनाया। श्री वीरेन्द्र कुण्डू के अतिरिक्त आर्य समाज टिटौली के अन्य कार्यकर्ताओं ने भी इसमें अपना पूरा योगदान दिया। महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय की छात्र–छात्राओं को कार्यक्रम में सम्मिलित करने के लिए प्रो. कर्मवीर श्योकन्द, डॉ. श्री भगवान, श्री सविता राठी, डॉ. मीनाक्षी हुड्डा, डॉ. सोनू आदि का विशेष सहयोग रहा। इन सभी प्रोफसरों को भी श्री बलराज वर्मा जी ने विशेष रूप से सम्मानित किया और श्री वीरेन्द्र कुण्डू के भी कार्यक्रम में योगदान की विशेष प्रशंसा की। कार्यक्रम अत्यन्त रोचक, प्रभावशाली एवं सफल रहा।

प्रो० विट्ठलराव आर्य, सभा मंत्री, प्रकाशक व मुद्रक द्वारा सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, 3/5 महर्षि दयानन्द भवन, (रामलीला मैदान/आसफ अली रोड), नई दिल्ली-110002 के लिए प्रकाशित तथा ज्योति प्रिंटिंग प्रेस, ई-94, सैक्टर-6, नोएडा-201301 से प्रकाशित एवं मुद्रित। (फोन : 011-23274771, 23260985 टेलीफैक्स : 23274216)
सम्पादक : प्रो० विट्ठलराव आर्य (सभा मन्त्री) मो.:0-9849560691, 0-9013251500 ई-मेल : sarvadeshik@yahoo.co.in, sarvadeshikarya@gmail.com वैबसाइट : www.vedicaryasamaj.com
वैदिक सार्वदेशिक साप्ताहिक में छपे लेखों तथा विचारों से सम्पादक या सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की सैद्धान्तिक मतैक्यता होना अनिवार्य नहीं है।